लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए।
कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए।। १ ।।

कुरान की आयतों और सूरतों में जगह-जगह पर कयामत की बातें लिखी हैं।

अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरान थें किन।
सो रूहअल्ला के इलमसे, जाहेर हुई सबन।। २ ।।

अब तक किसी को भी कुरान से कयामत की तारीख का पता नहीं लगा था। अब श्यामाजी महारानी के दूसरे जामा श्री प्राणनाथजी के तन से कुलजम सरूप की वाणी आई। उससे कयामत के सभी भेद खुल गए।

सबों सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर।। ३ ।।

कयामत के सभी सिपारों में ही कयामत के किस्से लिखे हैं, परन्तु उन खुदाई वचन के छिपे रहस्य श्री प्राणनाथजी के बिना कोई नहीं बता सकता।

आगूं नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप।। ४ ।।

कुरान में लिखा है कि नौवीं सदी के बाद रूहों का मिलाप होगा और इस बड़े मेले में स्वयं खुदा पारब्रह्म आकर दर्शन देंगे।

बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे।
गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे।। ५ ।।

दसवीं सदी के जब सवा नौ साल बाकी रहे, अर्थात् सम्वत् १६३८ में श्री श्यामाजी महारानी आत्माओं को लेकर आईं और श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुईं।

रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी को दूसरे जामे श्री प्राणनाथजी के तन में ज्यादा शोभा मिली। इन्होंने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के रूप में एक बन्दगी का हजार फल दिया।

बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरानमें तित।। ७ ।।

कुरान में लिखा है कि ग्यारहवीं सदी के बीच श्री प्राणनाथजी को जगह-जगह पर कुलजम सरूप की वाणी उतरी। श्री राजजी महाराज की अखण्ड न्यामत को श्री श्यामा महारानी और श्री प्राणनाथजी महाराज ने ग्रहण किया जैसा कुरान में लिखा है।

एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन।
मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन।। ८ ।।

श्री देवचन्द्रजी के तन से दो पुत्र नसली और नजरी हुए। उनमें से एक बचपन से ही अलग हो गया। दूसरे को सत्तानवें वर्ष के बाद अनूपशहर में कुरान का ज्ञान सनन्ध मिला।

Nijanand App

किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत।
महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत।। ९ ।।

अनूपशहर में श्री राजजी महाराज की तरफ से सनंध की किताब की वाणी उतरी। दिल्ली में आठ महीने तक औरंगजेब बादशाह से कुरान की वाणी से युद्ध हुआ। इसी काम के लिए सूरत से चले थे।

पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई।
ए साल निन्यानवें लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने दिल्ली की मंजिल तक पांच किताबें (रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध) कुरान के छिपे रहस्य निन्यानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से १७३७ तक, अर्थात् रामनगर में जाकर जाहिर हुए। भिखारी दास के द्वारा शेख खिदर को पता चला जिसने औरगंजेब को लिखा।

लकब इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल।
जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल।। ११ ।।

रामनगर में ही सम्वत् १७३८ में सौ साल पूरे हुए तो इद्रीस पैगम्बर का खिताब मिला जिसने टुकड़े-टुकड़े जोड़कर चादर बनाई थी। इस तरह श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान और पुराण से सब प्रमाण इकट्ठे करके एक सीधा रास्ता निजानन्द सम्प्रदाय जाहिर किया और अनूपशहर में जो तीस सनंधें उतरीं वह शेख खिदर के सामने सनंध वाणी जाहिर हुई।

टोना कह्या महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए।
वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए।। १२ ।।

कुरान में किस्सा लिखा है कि एक यहूदी की लड़की ने मुहम्मद साहब पर टोना किया और ग्यारह गांठ बालों से लगाईं। जब तक वह ग्यारह गांठें खुल नहीं जातीं तब तक टोना टल नहीं सकता।

दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठें सब।
आमर महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब।। १३ ।।

ग्यारहवीं सदी में सब गांठें खुल गईं। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी जाहिर हुई और ठिकाने-ठिकाने मोमिनों ने उसे पहुंचाया।

दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी कयामत।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत।। १४ ।।

कुरान में दस और दो बुर्जों का जो बयान कहा है, वह कयामत के बारहवीं सदी में जाहिर होने के निशान हैं, अर्थात् बारहवीं सदी में इस कयामत के वायदे को जाहिरी अर्थ लेने वाले नहीं समझ सकते।

दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक।
आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक।। १५ ।।

दसवीं सदी के बाद दो बुर्जों का अर्थ है कि दो स्वरूपों का आना, तो मलकी स्वरूप श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज आए। श्री प्राणनाथजी महाराज सबका हिसाब करके सबको अखण्ड ठिकानों पर पहुंचाएंगे।

Nijanand App

इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर।। १६ ।।

इस लीला के बीच में जो होना है उन वर्षों की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष, अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७४५ तक तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष, अर्थात सम्वत् १७४५ से १७७५ तक ईसा रूह अल्ला की पातसाही कही है, इसमें प्रथम दस वर्षों में मोमिनों को आत्मिक खुराक तथा पीछे तीस वर्षों में ईश्वरीसृष्टि सहित जागनी होगी। उपरान्त सत्तर वर्ष १७७५ से १८४५ तक पुलसरात यानि शरीयत से जीवसृष्टि की जागनी होगी।

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब।
पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब।। १७ ।।

ग्यारहवीं सदी के इन दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों को वाणी के उतरने से बहुत आनन्द मिला। बारहवीं सदी के जब तीस वर्ष हुए तो मोमिनों ने वाणी को संसार में फैलाया। इसके बाद सत्तर वर्ष पुलसरात के कहे हैं जो सम्वत् १८४५ तक पूरे होते हैं—इस समय अजाजील फरिश्ता पश्चाताप कर वाणी को ग्रहण करेगा।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब।। १८ ।।

उसके बाद तेरहवीं सदी में असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करके मोमिनों की जागनी करेंगे और फिर सब बहिश्तों के अखण्ड सुख लेंगे। इस तरह से सब दुनियां अपने कर्मों के अनुसार अक्षर की नजर योगमाया में कायम हो जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ३२८ ॥

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे में जो लिखा है उसे मैंने अपने दिल में संजोकर रखा है। अब उसके बातूनी रहस्य खोलने का समय आ गया है, इसलिए ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते जाहिर करती हूं।

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर।। २ ।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि कयामत के समय में कई के मुख उज्ज्वल होंगे और कई के मुख काले होंगे। कई ईमानदार होंगे, कई बेईमान होंगे।

हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने रास, प्रकास, खटरुती की वाणी भेजी, परन्तु कपट के कारण गादीपति बिहारीजी महाराज ने वाणी जाहिर नहीं होने दी। इस तरह से रास और कलस की वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह पक्के काफिर हैं। बिहारीजी कलस को क्लेश कहते थे।

Nijanand App